

पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक स्थिति एवं खेल सहभागिता: चयनित खेल प्रशिक्षण केन्द्रों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Ms. Namita Upadhyay¹, Dr. Sheeba Siddiqui²

¹Research Scholar, Department of Sociology, University of Lucknow

²Assistant Professor, Mumtaz P. G. College, Lucknow

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य चयनित खेल प्रशिक्षण केन्द्रों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, खेल सहभागिता, प्रशिक्षण सुविधाओं, पारिवारिक एवं सामाजिक सहयोग तथा उनके सामने उपस्थित सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन करना है। अध्ययन इस धारणा पर आधारित है कि पैरा-एथलीट्स की स्थिति को केवल उनकी शारीरिक क्षमता या खेल प्रदर्शन के आधार पर नहीं समझा जा सकता, बल्कि उनकी सामाजिक स्थिति परिवार, आर्थिक संसाधनों, सामाजिक दृष्टिकोण, संस्थागत सुविधाओं, प्रशिक्षण व्यवस्था, रोजगार के अवसरों तथा सामाजिक मान्यता जैसे विभिन्न कारकों से निर्मित होती है।

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े चयनित खेल प्रशिक्षण केन्द्रों में पैरा-एथलीट्स से प्रत्यक्ष संपर्क, साक्षात्कार तथा क्षेत्रीय अवलोकन के माध्यम से संकलित किए गए। प्रारम्भिक पायलट अध्ययन में 15 पैरा-एथलीट्स को सम्मिलित किया गया, जिनमें 10 पुरुष तथा 5 महिलाएँ थीं और सभी उत्तरदाता 20-30 वर्ष की आयु-वर्ग से संबंधित थे। चयनित अध्ययन केन्द्रों में लखनऊ तथा ग्वालियर स्थित संस्थानों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया तथा क्षेत्रीय अनुभवों को समझने के लिए प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।

प्रारम्भिक क्षेत्रीय अध्ययन से संकेत मिलता है कि पैरा-एथलीट्स को आर्थिक संसाधनों की कमी, सीमित पारिवारिक सहयोग, सामाजिक भेदभाव, आधुनिक खेल उपकरणों की कमी, उन्नत प्रशिक्षण सुविधाओं की सीमित उपलब्धता तथा प्रशिक्षण के बाद रोजगार और जीवन-वृत्ति संबंधी अनिश्चितताओं जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। साथ ही, कुछ प्रशिक्षण केन्द्रों में नियमित प्रशिक्षण तथा आवासीय सुविधाएँ उपलब्ध होने से खिलाड़ियों को खेल प्रतिभा विकसित करने का अवसर भी प्राप्त होता है।

अध्ययन पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता को सामाजिक पहचान, सामाजिक सम्मान और सशक्तीकरण की प्रक्रिया से जोड़कर देखता है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि पैरा-एथलीट्स के समग्र विकास के लिए केवल खेल प्रशिक्षण पर्याप्त नहीं है; इसके साथ आधुनिक खेल सुविधाएँ, प्रशिक्षित मानव संसाधन, स्वास्थ्य एवं पुनर्वास सहायता, पारिवारिक एवं सामाजिक सहयोग, रोजगार के अवसर तथा दीर्घकालीन संस्थागत समर्थन आवश्यक हैं। इस प्रकार पैरा-स्पोर्ट्स को केवल खेल उपलब्धि के क्षेत्र के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक समावेशन और सशक्तीकरण के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में समझना आवश्यक है।

प्रमुख शब्द: पैरा-एथलीट्स, दिव्यांगता, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, खेल सहभागिता, सामाजिक समावेशन, संस्थागत सहयोग, सामाजिक सशक्तीकरण।

1. परिचय

दिव्यांगता मानव जीवन और सामाजिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। इसे केवल व्यक्ति की शारीरिक अथवा

चिकित्सकीय स्थिति के रूप में समझना पर्याप्त नहीं है, क्योंकि व्यक्ति की कार्यक्षमता और सामाजिक सहभागिता पर उसके आसपास का भौतिक, सामाजिक तथा संस्थागत वातावरण भी प्रभाव डालता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2021 के आकलनों के आधार पर विश्व की लगभग 16 प्रतिशत जनसंख्या, अर्थात् लगभग 1.3 अरब लोग, किसी न किसी महत्वपूर्ण दिव्यांगता के साथ जीवन व्यतीत कर रहे थे। विश्व स्वास्थ्य संगठन यह भी रेखांकित करता है कि दिव्यांगता का अनुभव व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति और उसके व्यक्तिगत तथा पर्यावरणीय कारकों के बीच अंतःक्रिया से निर्मित होता है।

दिव्यांग व्यक्तियों के सामाजिक अनुभव केवल उनकी व्यक्तिगत स्थिति से निर्धारित नहीं होते। सामाजिक कलंक, भेदभाव, गरीबी, शिक्षा एवं रोजगार से बहिष्करण, असुलभ परिवहन तथा अपर्याप्त सामाजिक सहयोग जैसी परिस्थितियाँ उनके जीवन में असमानता को बढ़ा सकती हैं। इस प्रकार दिव्यांगता का प्रश्न व्यक्तिगत क्षमता के साथ-साथ सामाजिक संरचना, संस्थागत व्यवस्था और अवसरों की उपलब्धता से भी संबंधित है।

इसी कारण दिव्यांगता के समाजशास्त्रीय अध्ययन में यह समझना आवश्यक हो जाता है कि समाज विभिन्न संस्थाओं और संसाधनों के माध्यम से दिव्यांग व्यक्तियों के जीवन-अनुभवों को किस प्रकार प्रभावित करता है। परिवार, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, परिवहन, खेल तथा राज्य की नीतियाँ इस संदर्भ में महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थागत क्षेत्र हैं।

1.1 खेल एवं दिव्यांग व्यक्तियों की सामाजिक सहभागिता

खेल दिव्यांग व्यक्तियों के लिए केवल शारीरिक गतिविधि अथवा प्रतियोगिता का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक सहभागिता, आत्म-अभिव्यक्ति, सामाजिक पहचान और सामुदायिक जुड़ाव का भी महत्वपूर्ण क्षेत्र हो सकता है। खेलों में भागीदारी व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करने, अन्य खिलाड़ियों के साथ सामाजिक संबंध विकसित करने तथा सार्वजनिक जीवन में सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करती है।

दिव्यांग व्यक्तियों के खेल अधिकार को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी मान्यता प्राप्त है। संयुक्त राष्ट्र के दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर अभिसमय के अनुच्छेद 30 में दिव्यांग व्यक्तियों की समान आधार पर मनोरंजन, अवकाश और खेल गतिविधियों में भागीदारी के अधिकार को मान्यता दी गई है। इसमें दिव्यांग व्यक्तियों के लिए खेल प्रशिक्षण, संसाधनों तथा खेल एवं मनोरंजन स्थलों तक पहुँच सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया गया है।

इस दृष्टि से पैरा-स्पोर्ट्स को दिव्यांग व्यक्तियों के सामाजिक समावेशन की व्यापक प्रक्रिया के एक महत्वपूर्ण क्षेत्र के रूप में देखा जा सकता है। खेल में सहभागिता व्यक्ति को केवल प्रतियोगी भूमिका ही नहीं देती, बल्कि उसकी सामाजिक पहचान को भी प्रभावित कर सकती है। विशेष रूप से उच्च स्तर की खेल उपलब्धि सामाजिक मान्यता और सार्वजनिक पहचान के नए अवसर उत्पन्न कर सकती है। हालांकि इन संभावनाओं का वास्तविक प्रभाव खिलाड़ी की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, पारिवारिक सहयोग, प्रशिक्षण सुविधाओं तथा संस्थागत समर्थन जैसी परिस्थितियों से जुड़ा रहता है।

1.2 भारत में दिव्यांग व्यक्तियों और खेलों का कानूनी संदर्भ

भारत में दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों के लिए दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 एक महत्वपूर्ण कानूनी आधार प्रदान करता है। इस अधिनियम में शिक्षा, कौशल विकास, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, पुनर्वास, सुगम्यता तथा खेल गतिविधियों से संबंधित विभिन्न प्रावधान किए गए हैं। अधिनियम में खेल गतिविधियों के लिए पृथक धारा 30 निर्धारित की गई है।

अधिनियम की धारा 30 के अनुसार उपयुक्त सरकार को दिव्यांग व्यक्तियों की खेल गतिविधियों में प्रभावी भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपाय करने हैं। साथ ही खेल प्राधिकरणों से दिव्यांग व्यक्तियों के खेल में भाग लेने के अधिकार को मान्यता देने तथा खेल व्यवस्थाओं में उनके समावेशन के लिए आवश्यक प्रावधान करने की अपेक्षा की गई है।

यह कानूनी व्यवस्था इस बात को स्वीकार करती है कि दिव्यांग व्यक्तियों की खेल सहभागिता केवल व्यक्तिगत रुचि का विषय नहीं है, बल्कि समान अवसर और सामाजिक भागीदारी से जुड़ा अधिकार भी है। इसी कारण खेल

प्रशिक्षण केन्द्रों में उपलब्ध सुविधाओं, प्रशिक्षण संसाधनों, संस्थागत सहयोग तथा वास्तविक खेल सहभागिता का अध्ययन समाजशास्त्रीय दृष्टि से महत्वपूर्ण हो जाता है।

2. समस्या का कथन

दिव्यांग व्यक्तियों की सामाजिक स्थिति को केवल उनकी शारीरिक अथवा चिकित्सकीय स्थिति के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं है। उनके सामाजिक जीवन में शिक्षा, रोजगार, आर्थिक संसाधन, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक दृष्टिकोण, संस्थागत सुविधाएँ तथा सार्वजनिक जीवन में भागीदारी जैसे अनेक कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। खेल भी इसी व्यापक सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। संयुक्त राष्ट्र के दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों पर अभिसमय तथा भारत के दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में दिव्यांग व्यक्तियों की खेल गतिविधियों में भागीदारी और खेल सुविधाओं तक पहुँच को मान्यता दी गई है।

इसके बावजूद किसी पैरा-एथलीट की वास्तविक खेल सहभागिता केवल कानूनी अधिकारों की उपलब्धता से निर्धारित नहीं होती। प्रशिक्षण सुविधाओं की उपलब्धता, आधुनिक खेल उपकरण, प्रशिक्षित प्रशिक्षक, आर्थिक संसाधन, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक दृष्टिकोण, प्रतियोगिताओं में भाग लेने के अवसर तथा खेल के बाद रोजगार और जीवन-वृत्ति की संभावनाएँ भी उसकी खेल यात्रा को प्रभावित कर सकती हैं।

प्रस्तुत पायलट अध्ययन में चयनित प्रशिक्षण केन्द्रों के पैरा-एथलीट्स से प्राप्त प्राथमिक सूचनाओं में आर्थिक संसाधनों की कमी, सीमित पारिवारिक सहयोग, सामाजिक भेदभाव एवं संवेदनहीनता, आधुनिक खेल उपकरणों की कमी, उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता तथा प्रशिक्षण के बाद रोजगार और दीर्घकालीन जीवन-वृत्ति संबंधी अनिश्चितताओं जैसी समस्याओं की ओर संकेत मिला है। दूसरी ओर, कुछ संस्थानों में नियमित प्रशिक्षण और आवासीय सुविधाएँ भी उपलब्ध पाई गईं। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र में अवसरों और बाधाओं दोनों की उपस्थिति दिखाई देती है।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन की मूल समस्या यह है कि “चयनित खेल प्रशिक्षण केन्द्रों में पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, खेल सहभागिता, संस्थागत सुविधाओं और सामाजिक सहयोग के बीच किस प्रकार का संबंध दिखाई देता है तथा इन खिलाड़ियों के समक्ष कौन-कौन सी प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और संस्थागत चुनौतियाँ उपस्थित हैं।”

3. अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

पैरा-एथलीट्स का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि खेल दिव्यांग व्यक्तियों के लिए शारीरिक गतिविधि के साथ-साथ सामाजिक सहभागिता, पहचान और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी का माध्यम भी बन सकता है। खेल के माध्यम से व्यक्ति अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित करता है और समाज में अपनी पहचान को केवल दिव्यांगता तक सीमित रहने से आगे ले जाने का अवसर प्राप्त कर सकता है। इस दृष्टि से पैरा-स्पोर्ट्स का अध्ययन दिव्यांगता, सामाजिक पहचान और सामाजिक समावेशन के बीच संबंधों को समझने में उपयोगी है।

अध्ययन की आवश्यकता का दूसरा आधार पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से संबंधित है। खेल प्रशिक्षण के लिए केवल प्रतिभा पर्याप्त नहीं होती। प्रशिक्षण, उपकरण, यात्रा, पोषण, स्वास्थ्य, प्रतियोगिता तथा अन्य आवश्यकताओं के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती है। आर्थिक रूप से कमजोर सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले खिलाड़ियों के लिए इन संसाधनों तक पहुँच एक महत्वपूर्ण प्रश्न बन सकती है। इसी प्रकार परिवार और सामाजिक नेटवर्क से प्राप्त सहयोग खिलाड़ी की खेल यात्रा को प्रभावित कर सकता है।

तीसरा महत्वपूर्ण पक्ष संस्थागत सुविधाओं का है। दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में दिव्यांग व्यक्तियों की खेल गतिविधियों में प्रभावी भागीदारी तथा खेल अवसररचना और प्रशिक्षण सुविधाओं की उपलब्धता से संबंधित प्रावधान किए गए हैं। इसलिए यह अध्ययन यह समझने का अवसर प्रदान करता है कि चयनित प्रशिक्षण केन्द्रों में उपलब्ध सुविधाएँ खिलाड़ियों के अनुभवों और आवश्यकताओं के संदर्भ में किस प्रकार दिखाई देती हैं।

चौथा पक्ष खेल उपलब्धि और सामाजिक पहचान का है। जब कोई दिव्यांग व्यक्ति खिलाड़ी के रूप में पहचान प्राप्त करता है, तो उसकी सामाजिक भूमिका और सामाजिक प्रतिष्ठा में परिवर्तन की संभावना उत्पन्न होती है। इसलिए पैरा-एथलीट्स का अध्ययन दिव्यांगता को केवल अक्षमता के संदर्भ में देखने के बजाय क्षमता, उपलब्धि और सामाजिक पहचान के संदर्भ में समझने में सहायता करता है।

अंततः यह अध्ययन नीति एवं संस्थागत व्यवस्था के लिए भी उपयोगी हो सकता है। यदि क्षेत्रीय स्तर पर खिलाड़ियों को आधुनिक उपकरण, तकनीकी प्रशिक्षण, रोजगार मार्गदर्शन, स्वास्थ्य सहायता अथवा सामाजिक सहयोग से संबंधित समस्याएँ दिखाई देती हैं, तो इन क्षेत्रों को भविष्य की योजना और कार्यक्रमों में अधिक प्रभावी ढंग से शामिल किया जा सकता है। इस प्रकार अध्ययन का महत्व केवल खेल क्षेत्र तक सीमित न होकर सामाजिक समावेशन, समान अवसर और दिव्यांग व्यक्तियों के सशक्तीकरण से भी संबंधित है।

4. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।
2. खेल सुविधाओं एवं संस्थागत सहयोग का अध्ययन करना।
3. खेल सहभागिता की सामाजिक एवं संरचनात्मक बाधाओं का अध्ययन करना।

5. शोध प्रश्न

अध्ययन के उद्देश्यों के आधार पर निम्नलिखित शोध प्रश्न निर्धारित किए गए हैं—

1. पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक स्थिति कैसी है?
2. उन्हें खेल सुविधाएँ एवं संस्थागत सहयोग कितना प्राप्त है?
3. उनकी खेल सहभागिता में प्रमुख सामाजिक एवं संरचनात्मक बाधाएँ क्या हैं?

6. सैद्धान्तिक एवं वैचारिक रूपरेखा

6.1 दिव्यांगता का सामाजिक प्रतिमान

दिव्यांगता को समझने के लिए परंपरागत रूप से चिकित्सकीय दृष्टिकोण का प्रयोग किया जाता रहा है, जिसमें दिव्यांगता को मुख्यतः व्यक्ति की शारीरिक अथवा मानसिक स्थिति से जोड़कर देखा जाता है। इसके विपरीत सामाजिक प्रतिमान यह तर्क प्रस्तुत करता है कि व्यक्ति की कठिनाइयाँ केवल उसकी व्यक्तिगत शारीरिक स्थिति से उत्पन्न नहीं होतीं, बल्कि समाज में विद्यमान भौतिक, सामाजिक और संस्थागत बाधाएँ भी उसकी सहभागिता को सीमित कर सकती हैं।

माइकल ओलिवर ने दिव्यांगता के सामाजिक प्रतिमान के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस दृष्टिकोण में व्यक्ति की शारीरिक अक्षमता और सामाजिक रूप से निर्मित दिव्यांगता के बीच अंतर किया जाता है। इसका मूल विचार यह है कि समाज की संरचना, संस्थाएँ और सामाजिक व्यवस्थाएँ यदि किसी व्यक्ति की समान भागीदारी में बाधा उत्पन्न करती हैं, तो समस्या को केवल व्यक्ति की व्यक्तिगत कमी के रूप में नहीं समझा जा सकता।

प्रस्तुत अध्ययन में यह दृष्टिकोण विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता को केवल उनकी शारीरिक क्षमता के आधार पर नहीं समझा जा सकता। खेल परिसर की सुगम्यता, प्रशिक्षण उपकरण, प्रशिक्षकों की उपलब्धता, परिवहन, आर्थिक सहायता, प्रतियोगिता के अवसर तथा सामाजिक दृष्टिकोण जैसे कारक उनकी वास्तविक खेल सहभागिता को प्रभावित कर सकते हैं।

इस प्रकार अध्ययन में यह देखा जाएगा कि पैरा-एथलीट्स के सामने उपस्थित कठिनाइयाँ व्यक्तिगत स्तर की हैं अथवा सामाजिक एवं संस्थागत संरचनाओं से भी संबंधित हैं।

6.2 एर्विंग गोफमैन का कलंक सिद्धान्त

एर्विंग गोफमैन ने अपनी प्रसिद्ध कृति *Stigma: Notes on the Management of Spoiled Identity* में कलंक को ऐसी सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझाया जिसमें किसी व्यक्ति की सामाजिक पहचान को किसी विशेष विशेषता के आधार पर कमतर या नकारात्मक रूप में देखा जाने लगता है। गोफमैन के अनुसार सामाजिक पहचान केवल व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं से निर्धारित नहीं होती, बल्कि सामाजिक अपेक्षाएँ और दूसरों की प्रतिक्रियाएँ भी व्यक्ति की पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

दिव्यांगता के संदर्भ में यह सिद्धान्त विशेष रूप से उपयोगी है क्योंकि दिव्यांग व्यक्ति को समाज द्वारा उसकी क्षमता के बजाय उसकी दिव्यांगता के आधार पर परिभाषित किए जाने की संभावना रहती है। ऐसी सामाजिक धारणाएँ व्यक्ति के आत्म-सम्मान, सामाजिक संबंधों और सार्वजनिक सहभागिता को प्रभावित कर सकती हैं।

पैरा-एथलीट्स के संदर्भ में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या खेल उपलब्धि व्यक्ति की सामाजिक पहचान को पुनर्गठित करने में सहायता करती है। यदि समाज किसी व्यक्ति को केवल दिव्यांग व्यक्ति के रूप में देखने के बजाय एक सक्षम खिलाड़ी के रूप में पहचानने लगता है, तो खेल सामाजिक पहचान के पुनर्निर्माण का माध्यम बन सकता है।

प्रस्तुत अध्ययन में गोफमैन के सिद्धान्त का उपयोग सामाजिक दृष्टिकोण, भेदभाव, सम्मान, सामाजिक पहचान तथा पैरा-एथलीट के रूप में प्राप्त मान्यता से संबंधित प्राथमिक आँकड़ों की व्याख्या करने के लिए किया जाएगा।

6.3 पियरे बोरदियो का पूँजी सिद्धान्त

पियरे बोरदियो ने सामाजिक असमानता को समझने के लिए पूँजी की अवधारणा को व्यापक रूप दिया। उनके अनुसार सामाजिक जीवन में केवल आर्थिक पूँजी ही महत्वपूर्ण नहीं होती, बल्कि सांस्कृतिक पूँजी, सामाजिक पूँजी और प्रतीकात्मक पूँजी भी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और अवसरों को प्रभावित करती हैं।

आर्थिक पूँजी में धन और भौतिक संसाधन आते हैं। सांस्कृतिक पूँजी व्यक्ति के ज्ञान, कौशल, शिक्षा और व्यवहारिक क्षमताओं से संबंधित होती है। सामाजिक पूँजी सामाजिक संबंधों और नेटवर्क से जुड़ी होती है। प्रतीकात्मक पूँजी सामाजिक मान्यता, प्रतिष्ठा और सम्मान के रूप में दिखाई दे सकती है।

पैरा-एथलीट्स के अध्ययन में बोरदियो का दृष्टिकोण इसलिए उपयोगी है क्योंकि खेल में सफलता के लिए केवल व्यक्तिगत प्रतिभा पर्याप्त नहीं होती। आर्थिक संसाधन, प्रशिक्षण की सुविधा, प्रशिक्षकों से संबंध, परिवार का सहयोग, खेल संस्थाओं से संपर्क और सामाजिक मान्यता जैसे संसाधन खिलाड़ी की खेल यात्रा को प्रभावित कर सकते हैं।

इस दृष्टिकोण के आधार पर अध्ययन यह समझने का प्रयास करेगा कि विभिन्न प्रकार की पूँजी पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता और सामाजिक पहचान को किस प्रकार प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता बेहतर प्रशिक्षण और उपकरणों तक पहुँच को आसान बना सकती है, जबकि सामाजिक पूँजी प्रशिक्षकों, संस्थाओं और प्रतियोगिताओं से जुड़े अवसरों तक पहुँच में सहायता कर सकती है। खेल उपलब्धि स्वयं प्रतीकात्मक पूँजी के निर्माण का माध्यम बन सकती है।

6.4 सैद्धान्तिक रूपरेखा का निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में दिव्यांगता के सामाजिक प्रतिमान, एर्विंग गोफमैन के कलंक सिद्धान्त तथा पियरे बोरदियो के पूँजी सिद्धान्त को परस्पर पूरक दृष्टिकोणों के रूप में प्रयोग किया गया है। सामाजिक प्रतिमान के माध्यम से अध्ययन यह समझने का प्रयास करता है कि पैरा-एथलीट्स की कठिनाइयों में सामाजिक एवं संस्थागत बाधाओं की क्या भूमिका है। गोफमैन का कलंक सिद्धान्त सामाजिक दृष्टिकोण, भेदभाव और सामाजिक पहचान को समझने में सहायता करता है, जबकि बोरदियो का पूँजी सिद्धान्त आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक संसाधनों की असमान उपलब्धता तथा उनके खेल अवसरों से संबंध को समझने में उपयोगी है।

इन तीनों दृष्टिकोणों को प्राथमिक आँकड़ों के साथ जोड़कर अध्ययन पैरा-एथलीट्स की स्थिति का बहुआयामी समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

7. साहित्य की समीक्षा

रमेश सिंह (2012) ने खेलों के युवाओं पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का अध्ययन करते हुए बताया कि खेल शारीरिक लाभ, आत्म-सम्मान और मानसिक सशक्तिकरण को बढ़ावा दे सकते हैं, जबकि अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, चोट और अवसरों की असमानता चुनौतियाँ भी उत्पन्न कर सकती हैं। मार्टिन जेफरी एवं फ्रांसेस्का विटाली (2014) ने बताया कि खेल एवं शारीरिक गतिविधियाँ दिव्यांग व्यक्तियों में सामाजिक जुड़ाव, आत्मविश्वास और जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन पैरा-एथलीट्स को यात्रा, उपकरण, प्रशिक्षक और प्रतियोगिता संबंधी अनेक व्यावहारिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

इन्हान लेवेंट एकरम (2023) के अध्ययन में दिव्यांगता की स्वीकृति, खेल सहभागिता और लचीलेपन के बीच संबंधों को समझाया गया तथा यह संकेत मिला कि खेल सहभागिता दिव्यांग व्यक्तियों की सामाजिक एवं व्यक्तिगत अनुकूलन क्षमता को मजबूत कर सकती है।

Fay Ted एवं Eli Wolff (2009) ने खेलों में दिव्यांग व्यक्तियों के लिए समान अवसर, पहुँच और समावेशन की आवश्यकता पर बल दिया तथा बताया कि संस्थागत नीतियों और खेल संरचनाओं में दिव्यांगता को पर्याप्त रूप से ध्यान में रखना आवश्यक है। विकास सिंह, महेन्द्र कुमार सिंह एवं टेनजिंग नोरजेन भूटिया के अध्ययन में पैरा-एथलीट्स के आत्म-सम्मान और खेल प्रदर्शन के संबंध का अध्ययन किया गया तथा यह पाया गया कि सामाजिक मान्यता और मानसिक स्थिति खिलाड़ी के आत्म-सम्मान को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण तत्व हैं।

Dibyayan Ghorh एवं Kallol Chatterjee ने भारत में पैरा-खेलों के ऐतिहासिक विकास और वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए बताया कि प्रगति के बावजूद प्रशिक्षण, प्रतिभा पहचान और संसाधनों की उपलब्धता से संबंधित चुनौतियाँ बनी हुई हैं। Dawn Ranjita (2023) ने दिव्यांग व्यक्तियों की खेल सहभागिता से जुड़ी नीतिगत एवं प्रबंधकीय चुनौतियों को रेखांकित किया और परिवहन, खेल सुविधाओं, प्रशिक्षण तथा लैंगिक भेदभाव जैसी समस्याओं पर ध्यान आकर्षित किया।

‘Beyond the Field: India’s Sports Initiatives’ में भारत की खेल नीतियों और संस्थागत व्यवस्थाओं का अध्ययन करते हुए खेल प्रशिक्षण, आधारभूत सुविधाओं और युवाओं की खेल सहभागिता को बढ़ावा देने वाली विभिन्न पहलों पर प्रकाश डाला गया है। Miguel Angelo Duarte Junior एवं सहलेखकों ने उच्च प्रदर्शन करने वाले पैरा-एथलीट्स की पोषण संबंधी आवश्यकताओं का अध्ययन किया और यह स्पष्ट किया कि आयु, खेल और व्यक्तिगत परिस्थितियों के अनुसार उनकी पोषण आवश्यकताओं का वैज्ञानिक प्रबंधन आवश्यक है।

Larissa Santos Pinto Pinheiro एवं सहलेखकों की व्यवस्थित समीक्षा में पैरा-एथलीट्स में खेल संबंधी चोटों के जोखिम का अध्ययन किया गया तथा यह बताया गया कि दिव्यांगता के प्रकार और खेल की प्रकृति के अनुसार चोटों का जोखिम अलग-अलग हो सकता है। Luca Puce एवं सहलेखकों ने दिव्यांग खिलाड़ियों और पैरा-एथलीट्स के कल्याण तथा जीवन की गुणवत्ता से संबंधित साहित्य की समीक्षा करते हुए खेल सहभागिता को आत्म-स्वीकृति, सामाजिक समावेशन और बेहतर मनोसामाजिक स्थिति से जोड़ा।

Cameron M. Gee एवं सहलेखकों ने पैरा-एथलीट्स के शारीरिक प्रदर्शन से संबंधित कारकों का अध्ययन करते हुए बताया कि विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के अनुसार प्रशिक्षण और शारीरिक तैयारी में विशेष अनुकूलन आवश्यक होता है। Manuel Rodríguez Macías एवं सहलेखकों की व्यवस्थित समीक्षा में पैरा-एथलीट्स की प्रशिक्षण प्रक्रिया में प्रशिक्षक की विशेषज्ञता, खिलाड़ी के साथ संबंध और पारिवारिक समर्थन को महत्वपूर्ण कारक माना गया तथा आर्थिक संसाधनों और खेल सुविधाओं की कमी को प्रमुख बाधाओं के रूप में रेखांकित किया गया।

Philip Jefferies एवं सहलेखकों ने पैरालंपिक खिलाड़ियों के मनोसामाजिक पक्षों की समीक्षा करते हुए खेल पहचान, आत्मविश्वास और सामाजिक अनुकूलन के महत्व को स्पष्ट किया तथा पैरा-एथलीट्स के मनोसामाजिक अनुभवों को समझने की आवश्यकता पर बल दिया।

7.1 समेकित साहित्य समीक्षा

उपरोक्त अध्ययनों के समग्र अवलोकन से स्पष्ट होता है कि पैरा-स्पोर्ट्स को केवल प्रतियोगिता और शारीरिक प्रदर्शन के दृष्टिकोण से समझना पर्याप्त नहीं है। खेल दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सामाजिक सहभागिता, आत्म-सम्मान, आत्म-पहचान, सामाजिक स्वीकृति, सामाजिक जुड़ाव तथा जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करने वाला माध्यम भी हो सकता है।

साहित्य में एक ओर खेलों के सकारात्मक प्रभावों, जैसे सामाजिक समावेशन, आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान तथा सामाजिक पहचान के विकास को रेखांकित किया गया है, वहीं दूसरी ओर संरचनात्मक एवं संस्थागत बाधाओं की भी पहचान की गई है। इनमें प्रशिक्षण सुविधाओं की कमी, आधुनिक उपकरणों की अपर्याप्तता, वित्तीय संसाधनों की कमी, परिवहन संबंधी कठिनाइयाँ, प्रशिक्षित कर्मचारियों की कमी, सामाजिक भेदभाव तथा महिला खिलाड़ियों के लिए अवसरों की असमानता प्रमुख हैं।

पूर्ववर्ती अध्ययनों से यह भी स्पष्ट होता है कि परिवार, प्रशिक्षक तथा संस्थागत नेटवर्क पैरा-एथलीट्स के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी प्रकार आर्थिक एवं सामाजिक संसाधनों की उपलब्धता प्रशिक्षण और खेल उपलब्धि के अवसरों को प्रभावित कर सकती है।

7.2 शोध-अंतर

उपलब्ध साहित्य के आधार पर यह देखा जा सकता है कि पूर्ववर्ती अध्ययनों ने पैरा-एथलीट्स से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण पक्षों—जैसे खेल सहभागिता, सामाजिक समावेशन, आत्म-सम्मान, खेल-पहचान, प्रशिक्षण, पोषण, चोट, सामाजिक समर्थन तथा संस्थागत बाधाओं—का अध्ययन किया है। तथापि, इन सभी आयामों को एकीकृत सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से देखने वाले क्षेत्रीय अध्ययनों की आवश्यकता बनी हुई है।

विशेष रूप से भारतीय संदर्भ में पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, संस्थागत सुविधाओं, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक मान्यता, प्रशिक्षण की वास्तविक परिस्थितियों तथा रोजगार एवं भविष्य की आर्थिक सुरक्षा को एक साथ समझने की आवश्यकता दिखाई देती है।

वर्तमान अध्ययन इसी शोध-अंतर को संबोधित करने का प्रयास करता है। अध्ययन में पैरा-एथलीट्स के अनुभवों को केवल खेल प्रदर्शन के संदर्भ में नहीं, बल्कि व्यापक सामाजिक संरचना के संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है। इस प्रकार वर्तमान शोध खेल, दिव्यांगता, सामाजिक पहचान, सामाजिक समावेशन तथा सामाजिक-आर्थिक असमानता के अंतर्संबंधों को समझने की दिशा में योगदान करता है।

7.3 साहित्य समीक्षा का निष्कर्ष

समग्र रूप से साहित्य समीक्षा यह दर्शाती है कि खेल दिव्यांग व्यक्तियों के सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी भूमिका निभा सकता है। खेल सामाजिक पहचान, आत्म-सम्मान, सामाजिक सहभागिता और सामाजिक स्वीकृति के निर्माण में सहायता कर सकता है। इसके बावजूद संरचनात्मक, आर्थिक, संस्थागत और सामाजिक बाधाएँ पैरा-एथलीट्स की समान एवं प्रभावी भागीदारी को सीमित कर सकती हैं।

अतः वर्तमान अध्ययन में पैरा-एथलीट्स की स्थिति का अध्ययन केवल खेल उपलब्धि के आधार पर न करके उनकी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, प्रशिक्षण सुविधाओं, सामाजिक सहयोग, संस्थागत समर्थन, सामाजिक पहचान तथा भविष्य की संभावनाओं के संदर्भ में किया जाना आवश्यक है।

8. शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, खेल प्रशिक्षण की परिस्थितियों, संस्थागत सुविधाओं, पारिवारिक एवं सामाजिक सहयोग, सामाजिक पहचान तथा खेल सहभागिता से संबंधित अनुभवों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझना है। अध्ययन के लिए प्राथमिक आँकड़ों को प्रमुख आधार बनाया गया है। शोध प्रक्रिया को व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक बनाने के लिए क्षेत्रीय अवलोकन तथा प्रत्यक्ष साक्षात्कार का प्रयोग किया गया।

8.1 शोध अभिकल्प

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक एवं समाजशास्त्रीय शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है। वर्णनात्मक अभिकल्प के माध्यम से पैरा-एथलीट्स की सामाजिक-आर्थिक एवं संस्थागत परिस्थितियों का विवरण प्रस्तुत किया गया है, जबकि समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के माध्यम से इन परिस्थितियों के सामाजिक संबंधों, अवसरों, पहचान तथा सहभागिता पर प्रभाव को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार की सूचनाओं का उपयोग किया गया है। मात्रात्मक सूचनाओं को प्रतिशत के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा, जबकि उत्तरदाताओं के अनुभवों तथा क्षेत्रीय अवलोकनों का व्याख्यात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

8.2 अध्ययन क्षेत्र

अध्ययन के क्षेत्र के रूप में पैरा-एथलीट्स से संबंधित तीन संस्थागत केन्द्रों को शामिल किया गया:

1. डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ।
2. अटल बिहारी वाजपेयी दिव्यांग खेल प्रशिक्षण केन्द्र, ग्वालियर।
3. भारतीय खेल प्राधिकरण, लखनऊ।

इन संस्थानों का चयन इसलिए किया गया क्योंकि ये दिव्यांग व्यक्तियों के पुनर्वास, खेल प्रशिक्षण अथवा खेल विकास से संबंधित गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण संस्थागत स्थल हैं। क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान संस्थागत सुविधाओं, प्रशिक्षण व्यवस्था तथा खिलाड़ियों की वास्तविक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष अवलोकन किया गया।

8.3 अध्ययन की समष्टि

अध्ययन की समष्टि में चयनित संस्थानों से जुड़े पैरा-एथलीट्स को शामिल किया गया। अध्ययन का केंद्र उन खिलाड़ियों के अनुभवों पर है जो किसी न किसी रूप में पैरा-स्पोर्ट्स तथा प्रशिक्षण गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। अध्ययन के स्तर पर कुल 15 पैरा-एथलीट्स को अध्ययन में सम्मिलित किया गया। उत्तरदाताओं की आयु 20 से 30 वर्ष के बीच थी।

8.4 नमूना चयन

अध्ययन के लिए चयनित संस्थानों में उपलब्ध पैरा-एथलीट्स में से उत्तरदाताओं का चयन किया गया। इस चरण का उद्देश्य व्यापक अध्ययन के लिए शोध उपकरणों की उपयोगिता जाँचना तथा क्षेत्रीय परिस्थितियों की प्रारम्भिक समझ विकसित करना था। अध्ययन में कुल 15 उत्तरदाताओं को शामिल किया गया। इनमें पुरुष उत्तरदाताओं का प्रतिशत 66.67 प्रतिशत तथा महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 33.33 प्रतिशत था।

तालिका 1 : उत्तरदाताओं का लिंग-वितरण

लिंग	प्रतिशत
पुरुष	66.67%
महिला	33.33%
कुल	100%

स्रोत: क्षेत्रीय अध्ययन।

8.5 प्राथमिक आँकड़ों का स्रोत

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक आँकड़े सीधे क्षेत्र से प्राप्त किए गए। इसके लिए पैरा-एथलीट्स से प्रत्यक्ष बातचीत एवं साक्षात्कार तथा संस्थागत परिस्थितियों के प्रत्यक्ष अवलोकन का प्रयोग किया गया।

प्राथमिक आँकड़ों के प्रमुख क्षेत्र निम्नलिखित रहे:

- सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि
- खेल में प्रवेश एवं सहभागिता

- प्रशिक्षण की परिस्थितियाँ
- खेल उपकरण एवं आधारभूत सुविधाएँ
- प्रशिक्षकों एवं संस्थागत कर्मचारियों का सहयोग
- पारिवारिक सहयोग
- सामाजिक दृष्टिकोण एवं अनुभव
- सामाजिक पहचान एवं प्रतिष्ठा
- आर्थिक सहायता
- रोजगार एवं भविष्य की संभावनाएँ।

अध्ययन में प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अवलोकन के माध्यम से संस्थागत सुविधाओं एवं प्रशिक्षण परिस्थितियों की जानकारी भी एकत्र की गई।

8.6 द्वितीयक आँकड़ों का स्रोत

अध्ययन की सैद्धान्तिक एवं वैचारिक पृष्ठभूमि विकसित करने के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, व्यवस्थित समीक्षाओं, नीतिगत दस्तावेजों तथा अन्य प्रासंगिक शैक्षणिक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

द्वितीयक साहित्य का उपयोग मुख्यतः निम्नलिखित विषयों को समझने के लिए किया गया:

- दिव्यांगता और समाज
- खेल एवं सामाजिक समावेशन
- पैरा-एथलीट्स की सामाजिक पहचान
- आत्म-सम्मान
- सामाजिक समर्थन
- प्रशिक्षण एवं संस्थागत सुविधाएँ
- आर्थिक एवं संरचनात्मक बाधाएँ
- खेल नीति एवं समावेशन।

8.7 आँकड़ा-संग्रह के उपकरण

अध्ययन में प्राथमिक आँकड़े एकत्र करने के लिए साक्षात्कार अनुसूची तथा प्रत्यक्ष अवलोकन का प्रयोग किया गया। साक्षात्कार के माध्यम से उत्तरदाताओं के व्यक्तिगत अनुभवों, खेल संबंधी अनुभवों, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक व्यवहार तथा संस्थागत सुविधाओं से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई। प्रत्यक्ष अवलोकन के माध्यम से प्रशिक्षण केन्द्रों में उपलब्ध खेल सुविधाओं, उपकरणों, प्रशिक्षण व्यवस्था तथा आधारभूत संरचना का अध्ययन किया गया। इस प्रकार साक्षात्कार और अवलोकन दोनों विधियों के प्रयोग से उत्तरदाताओं द्वारा व्यक्त अनुभवों तथा क्षेत्र में दिखाई देने वाली वास्तविक परिस्थितियों के बीच संबंध स्थापित करने का प्रयास किया गया।

8.8 प्रमुख अध्ययन चर

अध्ययन में निम्नलिखित प्रमुख सामाजिक एवं संस्थागत चरों को ध्यान में रखा गया है:

क्रम	अध्ययन चर	प्रमुख संकेतक
1	सामाजिक-आर्थिक स्थिति	परिवार की आर्थिक स्थिति, आय एवं सामाजिक पृष्ठभूमि
2	खेल सहभागिता	खेल में प्रवेश, प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिता
3	प्रशिक्षण सुविधा	प्रशिक्षक, उपकरण एवं प्रशिक्षण व्यवस्था
4	संस्थागत सहयोग	संस्थागत सहायता एवं उपलब्ध संसाधन
5	पारिवारिक सहयोग	परिवार का प्रोत्साहन एवं सहयोग

6	सामाजिक अनुभव	सम्मान, भेदभाव एवं सामाजिक व्यवहार
7	सामाजिक पहचान	खिलाड़ी के रूप में पहचान एवं प्रतिष्ठा
8	भविष्य की सुरक्षा	रोजगार, आर्थिक सहायता एवं कैरियर अवसर

इन चरों के माध्यम से अध्ययन पैरा-एथलीट्स की स्थिति का बहुआयामी समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

8.9 आँकड़ा विश्लेषण की विधि

प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण मुख्यतः वर्णनात्मक सांख्यिकी के माध्यम से किया जाएगा। उत्तरदाताओं की प्रतिक्रियाओं को वर्गीकृत करके उनके प्रतिशत निकाले जाएंगे।

प्रतिशत निकालने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाएगा:

$$\text{प्रतिशत} = (\text{किसी श्रेणी के उत्तरदाताओं की संख्या} \div \text{कुल उत्तरदाताओं की संख्या}) \times 100$$

8.10 गुणात्मक आँकड़ों का विश्लेषण

उत्तरदाताओं के अनुभवों और क्षेत्रीय अवलोकनों को विषयगत आधार पर वर्गीकृत किया जाएगा। इसके अंतर्गत प्रमुख विषयों की पहचान की जाएगी, जैसे:

सामाजिक समर्थन → संस्थागत सहयोग → प्रशिक्षण बाधाएँ → आर्थिक कठिनाई → सामाजिक पहचान → भविष्य की सुरक्षा।

8.11 नैतिक पक्ष

अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं की गरिमा, गोपनीयता तथा स्वैच्छिक सहभागिता का ध्यान रखा जाएगा। उत्तरदाताओं से प्राप्त सूचनाओं का उपयोग केवल शोध के शैक्षणिक उद्देश्य के लिए किया जाएगा।

व्यक्तिगत पहचान से संबंधित सूचनाओं को अनावश्यक रूप से प्रकाशित नहीं किया जाएगा। उत्तरदाताओं के अनुभवों को उनके सामाजिक संदर्भ में समझने का प्रयास किया जाएगा तथा किसी भी उत्तरदाता को उसकी दिव्यांगता के आधार पर नकारात्मक रूप से प्रस्तुत नहीं किया जाएगा।

8.12 अध्ययन की भूमिका

अध्ययन का उद्देश्य केवल प्रारम्भिक आँकड़े प्राप्त करना नहीं था, बल्कि व्यापक शोध के लिए शोध उपकरणों और अध्ययन-चर को परिष्कृत करना भी था। पायलट अध्ययन से सामाजिक-आर्थिक स्थिति, प्रशिक्षण सुविधाओं, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक भेदभाव, संस्थागत संसाधनों तथा भविष्य की आर्थिक सुरक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण आयामों की पहचान हुई। क्षेत्रीय अध्ययन में आर्थिक संसाधनों की कमी, सीमित पारिवारिक सहयोग, सामाजिक भेदभाव, आधुनिक खेल उपकरणों की कमी, उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता तथा दीर्घकालीन कैरियर समर्थन की कमी जैसी समस्याएँ सामने आईं। इस प्रकार पायलट अध्ययन ने आगे किए जाने वाले विस्तृत अध्ययन के लिए आवश्यक चर, प्रश्नों तथा विश्लेषण की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

8.13 शोध पद्धति का संक्षिप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक क्षेत्रीय आँकड़ों को केंद्रीय आधार बनाते हुए वर्णनात्मक एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण अपनाया गया है। चयनित संस्थानों में प्रत्यक्ष अवलोकन तथा पैरा-एथलीट्स से साक्षात्कार के माध्यम से सूचनाएँ एकत्र की गईं। पायलट अध्ययन में 15 पैरा-एथलीट्स को शामिल किया गया तथा उनके सामाजिक-आर्थिक, प्रशिक्षण, संस्थागत एवं सामाजिक अनुभवों का अध्ययन किया गया।

9. प्राथमिक आँकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक आँकड़े चयनित खेल प्रशिक्षण संस्थानों में किए गए प्रत्यक्ष क्षेत्रीय अवलोकन तथा पैरा-एथलीट्स से किए गए साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र किए गए। अध्ययन में कुल 15 पैरा-एथलीट्स को शामिल किया गया। उत्तरदाताओं की आयु 20 से 30 वर्ष के बीच थी तथा अध्ययन में 10 पुरुष और 5 महिला

पैरा-एथलीट्स सम्मिलित थे। प्राथमिक आँकड़ों के विश्लेषण में मात्रात्मक सूचनाओं को प्रतिशत के रूप में तथा क्षेत्रीय अनुभवों को विषयगत विश्लेषण के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

9.1 उत्तरदाताओं का आयु-वितरण

अध्ययन में सम्मिलित सभी उत्तरदाताओं की आयु 20 से 30 वर्ष के बीच थी। इस प्रकार अध्ययन का पूरा नमूना युवा वयस्क पैरा-एथलीट्स पर केंद्रित रहा।

तालिका 1 : उत्तरदाताओं का आयु-वितरण

आयु-वर्ग	प्रतिशत
20-30 वर्ष	100
कुल	100

स्रोत: क्षेत्रीय अध्ययन।

व्याख्या: तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में सम्मिलित सभी उत्तरदाता 20-30 वर्ष आयु-वर्ग के थे। यह आयु-वर्ग सामाजिक एवं व्यावसायिक जीवन के निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है। इस अवस्था में व्यक्ति शिक्षा, रोजगार, सामाजिक पहचान तथा भविष्य की आर्थिक सुरक्षा से संबंधित निर्णयों के निर्माण की प्रक्रिया में होता है। अतः पैरा-एथलीट्स के लिए खेल प्रशिक्षण के साथ-साथ भविष्य के रोजगार एवं कैरियर की संभावनाएँ भी महत्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न बन जाती हैं।

9.2 उत्तरदाताओं का लिंग-वितरण

अध्ययन में कुल 15 पैरा-एथलीट्स को सम्मिलित किया गया, जिनमें 10 पुरुष तथा 5 महिला खिलाड़ी थीं।

तालिका 2 : उत्तरदाताओं का लिंग-वितरण

लिंग	प्रतिशत
पुरुष	66.67%
महिला	33.33%
कुल	100%

व्याख्या: तालिका से स्पष्ट है कि अध्ययन में पुरुष पैरा-एथलीट्स की भागीदारी महिला पैरा-एथलीट्स की तुलना में अधिक रही। पुरुष उत्तरदाताओं का प्रतिशत 66.67 प्रतिशत तथा महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 33.33 प्रतिशत था।

9.3 सामाजिक-आर्थिक स्थिति

क्षेत्रीय अध्ययन में यह पाया गया कि पैरा-एथलीट्स को आर्थिक संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है। आर्थिक सीमाएँ प्रशिक्षण, खेल उपकरण तथा अन्य आवश्यक संसाधनों तक पहुँच को प्रभावित कर सकती हैं।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण: खेल को सामान्यतः प्रतिभा और व्यक्तिगत प्रयास से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन पैरा-एथलीट्स के मामले में आर्थिक संसाधनों की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण दिखाई देती है। प्रशिक्षण, उपकरण, यात्रा तथा प्रतियोगिताओं में भागीदारी से जुड़े खर्च आर्थिक क्षमता से प्रभावित हो सकते हैं। इस प्रकार खेल में अवसरों की समानता केवल प्रतिभा पर निर्भर नहीं करती, बल्कि संसाधनों तक समान पहुँच भी आवश्यक है। यह निष्कर्ष बोरदियो की पूँजी संबंधी अवधारणा से जोड़ा जा सकता है, जिसमें आर्थिक एवं सामाजिक संसाधनों की उपलब्धता व्यक्ति के अवसरों को प्रभावित करती है।

9.4 पारिवारिक सहयोग एवं सामाजिक दृष्टिकोण

क्षेत्रीय अध्ययन में परिवार के सीमित सहयोग तथा जागरूकता की कमी को एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में दर्ज किया गया है। इसके साथ ही सामाजिक दृष्टिकोण में भेदभाव एवं संवेदनशीलता की कमी भी देखी गई।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण: परिवार दिव्यांग व्यक्ति के सामाजिक जीवन में प्राथमिक सामाजिक संस्था के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार का समर्थन व्यक्ति को खेल प्रशिक्षण जारी रखने, प्रतियोगिताओं में भाग लेने

तथा सामाजिक दबावों से निपटने में सहायता कर सकता है। इसके विपरीत सीमित पारिवारिक सहयोग तथा सामाजिक पूर्वाग्रह खेल सहभागिता को प्रभावित कर सकते हैं। इस संदर्भ में खेल केवल शारीरिक गतिविधि न होकर सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने का माध्यम भी बन सकता है।

9.5 खेल सुविधाओं की स्थिति

क्षेत्रीय अवलोकन में पाया गया कि चयनित प्रशिक्षण केन्द्रों में बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध हैं, लेकिन उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण की कमी तथा आधुनिक खेल उपकरणों एवं संसाधनों की अपर्याप्तता दिखाई देती है।

तालिका 3 : खेल सुविधाओं से संबंधित क्षेत्रीय निष्कर्ष

अध्ययन आयाम	क्षेत्रीय स्थिति
बुनियादी सुविधाएँ	उपलब्ध
उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण	कमी
आधुनिक खेल उपकरण	अपर्याप्तता
खेल संसाधन	सुधार की आवश्यकता

स्रोत: क्षेत्रीय अध्ययन।

व्याख्या: क्षेत्रीय निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि केवल आधारभूत खेल सुविधा उपलब्ध होना पर्याप्त नहीं है। उच्च स्तरीय खेल प्रदर्शन के लिए आधुनिक उपकरण, तकनीकी प्रशिक्षण तथा विशेषज्ञ सहयोग भी आवश्यक हैं। दिव्यांग खिलाड़ियों के मामले में यह आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि विभिन्न प्रकार की दिव्यांगताओं के अनुसार प्रशिक्षण पद्धति एवं उपकरणों में विशेष अनुकूलन की आवश्यकता हो सकती है।

9.6 संस्थागत सहयोग

क्षेत्रीय अध्ययन में कुछ संस्थानों में आवासीय सुविधा तथा नियमित प्रशिक्षण की व्यवस्था पाई गई। इसके बावजूद दीर्घकालीन कैरियर सहायता सीमित पाई गई तथा खिलाड़ियों के लिए कैरियर मार्गदर्शन की कमी दर्ज की गई।

तालिका 4 : संस्थागत सहयोग की स्थिति

संस्थागत पक्ष	क्षेत्रीय निष्कर्ष
आवासीय सुविधा	कुछ संस्थानों में उपलब्ध
नियमित प्रशिक्षण	उपलब्ध
दीर्घकालीन कैरियर सहयोग	सीमित
कैरियर मार्गदर्शन	कमी

समाजशास्त्रीय विश्लेषण: यह परिणाम दर्शाता है कि संस्थागत सहयोग को केवल प्रशिक्षण तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए। खिलाड़ी के दीर्घकालीन जीवन के लिए शिक्षा, रोजगार, कैरियर मार्गदर्शन तथा आर्थिक सुरक्षा भी आवश्यक हैं। इस प्रकार पैरा-एथलीट्स के लिए संस्थागत समर्थन को “प्रशिक्षण → प्रदर्शन → रोजगार → सामाजिक सुरक्षा” की निरंतर प्रक्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए।

9.7 रोजगार एवं भविष्य की आर्थिक सुरक्षा

अध्ययन में प्रशिक्षण के बाद खिलाड़ियों के लिए रोजगार के अवसरों को सीमित पाया गया। साथ ही जीवन-सुरक्षा एवं स्थिर आय को लेकर अनिश्चितता भी दर्ज की गई।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण: यह अध्ययन का एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष है क्योंकि खेल उपलब्धि अपने आप में स्थायी आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करती। यदि प्रशिक्षण के बाद रोजगार के पर्याप्त अवसर उपलब्ध न हों, तो खिलाड़ी का भविष्य आर्थिक रूप से असुरक्षित रह सकता है। इस स्थिति को सामाजिक स्तरीकरण एवं अवसरों की असमानता के व्यापक संदर्भ में समझा जा सकता है। खेल क्षेत्र में उपलब्धि के बावजूद यदि रोजगार एवं सामाजिक सुरक्षा के अवसर समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं, तो खेल उपलब्धि का सामाजिक-आर्थिक लाभ सीमित रह सकता है।

9.8 राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन एवं सामाजिक मान्यता

अध्ययन में यह भी दर्ज किया गया कि कई खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, लेकिन इसके बावजूद उन्हें अपेक्षित पहचान एवं समर्थन प्राप्त नहीं हो पाता।

समाजशास्त्रीय विश्लेषण: यह निष्कर्ष सामाजिक मान्यता और खेल उपलब्धि के बीच अंतर की ओर संकेत करता है। किसी खिलाड़ी की वास्तविक उपलब्धि और समाज द्वारा उसे प्राप्त होने वाली पहचान हमेशा समान नहीं होती। यहाँ गोफमैन की सामाजिक पहचान एवं कलंक संबंधी अवधारणाएँ उपयोगी हो सकती हैं। यदि समाज व्यक्ति को उसकी खेल क्षमता के बजाय उसकी दिव्यांगता के आधार पर देखता है, तो उसकी उपलब्धियों को अपेक्षित सामाजिक मान्यता नहीं मिल सकती। दूसरी ओर, खेल उपलब्धि दिव्यांगता से जुड़ी रूढ़ धारणाओं को चुनौती देने और खिलाड़ी की सामाजिक पहचान को पुनर्निर्मित करने का माध्यम भी बन सकती है।

9.9 समग्र क्षेत्रीय निष्कर्ष

अध्ययन से निम्न प्रमुख विषय उभरकर सामने आए:

क्रम	प्रमुख आयाम	क्षेत्रीय निष्कर्ष
1	आर्थिक स्थिति	आर्थिक संसाधनों की कमी
2	पारिवारिक सहयोग	सीमित सहयोग एवं जागरूकता
3	सामाजिक दृष्टिकोण	भेदभाव एवं संवेदनशीलता की कमी
4	खेल सुविधाएँ	आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध, पर उन्नत प्रशिक्षण में कमी
5	खेल उपकरण	आधुनिक उपकरण एवं संसाधनों की कमी
6	संस्थागत सहयोग	कुछ संस्थानों में आवासीय एवं नियमित प्रशिक्षण सुविधा
7	कैरियर सहयोग	दीर्घकालीन समर्थन सीमित
8	श्रोजगार	प्रशिक्षण के बाद रोजगार के अवसर सीमित
9	आर्थिक भविष्य	स्थिर आय एवं जीवन-सुरक्षा को लेकर अनिश्चितता
10	सामाजिक मान्यता	राष्ट्रीय स्तर के प्रदर्शन के बावजूद अपेक्षित पहचान एवं समर्थन में कमी

9.10 प्राथमिक आँकड़ों का प्रारम्भिक निष्कर्ष

प्राथमिक क्षेत्रीय अध्ययन से यह संकेत मिलता है कि पैरा-एथलीट्स की स्थिति को केवल खेल प्रदर्शन के आधार पर नहीं समझा जा सकता। उनकी खेल सहभागिता सामाजिक-आर्थिक संसाधनों, पारिवारिक सहयोग, संस्थागत सुविधाओं, प्रशिक्षण व्यवस्था, सामाजिक दृष्टिकोण तथा भविष्य के रोजगार अवसरों से जुड़ी हुई है। इस प्रकार अध्ययन में सामने आए निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि पैरा-एथलीट्स के लिए खेल क्षेत्र में समान अवसर सुनिश्चित करने हेतु केवल प्रशिक्षण सुविधाओं का विस्तार पर्याप्त नहीं है। इसके साथ आर्थिक सहायता, आधुनिक उपकरण, उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण, सामाजिक जागरूकता, कैरियर मार्गदर्शन तथा रोजगार के अवसरों को भी संस्थागत व्यवस्था का हिस्सा बनाना आवश्यक है।

10. चर्चा एवं समाजशास्त्रीय व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता को केवल खेल प्रदर्शन के संदर्भ में समझना नहीं है, बल्कि उसके सामाजिक, आर्थिक, संस्थागत तथा सांस्कृतिक आयामों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझना है। प्राथमिक क्षेत्रीय अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों तथा पूर्ववर्ती अध्ययनों की समीक्षा को साथ रखकर देखने पर स्पष्ट होता है कि पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता अनेक परस्पर संबंधित सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है।

10.1 खेल और सामाजिक समावेशन

पैरा-एथलीट्स के लिए खेल केवल शारीरिक गतिविधि अथवा प्रतियोगिता का माध्यम नहीं है, बल्कि यह सामाजिक सहभागिता और सामाजिक पहचान के निर्माण का महत्वपूर्ण माध्यम भी बन सकता है। पूर्ववर्ती साहित्य में यह पाया

गया है कि खेल सहभागिता दिव्यांग व्यक्तियों में सामाजिक जुड़ाव, आत्म-स्वीकृति तथा जीवन की गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है।

प्रस्तुत क्षेत्रीय अध्ययन में भी यह देखा गया कि पैरा-एथलीट्स खेल के माध्यम से अपनी पहचान को केवल दिव्यांग व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि खिलाड़ी के रूप में स्थापित करने का प्रयास करते हैं। इस प्रकार खेल सामाजिक पहचान के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह स्थिति प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के दृष्टिकोण से समझी जा सकती है। व्यक्ति की पहचान सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से निर्मित होती है। खेल का मैदान पैरा-एथलीट को ऐसी सामाजिक भूमिका प्रदान करता है जिसमें उसकी पहचान उसकी क्षमता, उपलब्धि और प्रदर्शन से निर्मित होती है।

10.2 सामाजिक पहचान और आत्म-सम्मान

पूर्ववर्ती अध्ययनों में पैरा-एथलीट्स के आत्म-सम्मान, आत्मविश्वास तथा खेल पहचान के बीच संबंध पर बल दिया गया है। साहित्य समीक्षा में सम्मिलित अध्ययनों से संकेत मिलता है कि खेल उपलब्धि दिव्यांग व्यक्तियों के आत्मविश्वास और सामाजिक पहचान को मजबूत कर सकती है।

प्राथमिक अध्ययन में भी यह आयाम महत्वपूर्ण दिखाई देता है। राष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों के बावजूद अपेक्षित सामाजिक पहचान एवं समर्थन का अभाव यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत उपलब्धि और सामाजिक मान्यता हमेशा समान नहीं होती। गोफमैन के कलंक संबंधी दृष्टिकोण के संदर्भ में इसे समझा जा सकता है। समाज में दिव्यांगता से जुड़ी पूर्वधारणाएँ व्यक्ति की सामाजिक पहचान को प्रभावित कर सकती हैं। खेल उपलब्धि ऐसी पूर्वधारणाओं को चुनौती देने का अवसर प्रदान करती है।

10.3 आर्थिक संसाधन और खेल सहभागिता

क्षेत्रीय अध्ययन में आर्थिक संसाधनों की कमी को पैरा-एथलीट्स की प्रमुख चुनौती के रूप में सामने रखा गया है। खेल प्रशिक्षण, उपकरण, यात्रा तथा प्रतियोगिताओं से जुड़े संसाधनों की उपलब्धता आर्थिक स्थिति से संबंधित होती है। यह निष्कर्ष सामाजिक असमानता के व्यापक संदर्भ में महत्वपूर्ण है। यदि खेल संसाधनों तक पहुँच आर्थिक क्षमता पर निर्भर करती है, तो समान प्रतिभा रखने वाले खिलाड़ियों के अवसर समान नहीं रह जाते।

बोरदियो की पूँजी की अवधारणा के अनुसार आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संसाधन व्यक्ति के अवसरों को प्रभावित करते हैं। इस दृष्टिकोण से पैरा-एथलीट्स के खेल अवसरों को केवल व्यक्तिगत प्रतिभा के आधार पर समझना पर्याप्त नहीं होगा।

10.4 परिवार की भूमिका

परिवार पैरा-एथलीट्स के सामाजिक जीवन तथा खेल सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उपलब्ध क्षेत्रीय निष्कर्षों में सीमित पारिवारिक सहयोग एवं जागरूकता की समस्या सामने आई है।

परिवार से मिलने वाला प्रोत्साहन खिलाड़ी को प्रशिक्षण जारी रखने तथा सामाजिक चुनौतियों का सामना करने में सहायता कर सकता है। इसके विपरीत परिवार में खेल के प्रति पर्याप्त समझ का अभाव खिलाड़ी के लिए अतिरिक्त बाधा उत्पन्न कर सकता है। इस प्रकार पैरा-एथलीट्स के खेल विकास को समझने के लिए परिवार को एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था के रूप में देखना आवश्यक है।

10.5 संस्थागत सुविधाएँ और संरचनात्मक बाधाएँ

अध्ययन में कुछ संस्थानों में आधारभूत सुविधाओं तथा नियमित प्रशिक्षण की उपलब्धता पाई गई, लेकिन आधुनिक खेल उपकरणों, उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण और दीर्घकालीन कैरियर सहयोग की सीमाएँ भी सामने आईं।

यह निष्कर्ष दर्शाता है कि संस्थागत समावेशन केवल किसी खिलाड़ी को प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं होना चाहिए। वास्तविक समावेशन के लिए प्रशिक्षण, उपकरण, तकनीकी सहायता, प्रतियोगिता अवसर, आवास, कैरियर मार्गदर्शन तथा रोजगार सहायता का समन्वित ढाँचा आवश्यक है। सामाजिक बहिष्करण के दृष्टिकोण से देखा जाए तो संसाधनों और संस्थागत अवसरों की असमान उपलब्धता व्यक्तियों को सामाजिक मुख्यधारा से आंशिक रूप से अलग कर सकती है।

10.6 सामाजिक दृष्टिकोण और भेदभाव

क्षेत्रीय अध्ययन में सामाजिक भेदभाव तथा संवेदनशीलता की कमी को भी एक महत्वपूर्ण चुनौती के रूप में दर्ज किया गया है। दिव्यांगता के प्रति समाज का दृष्टिकोण व्यक्ति के अनुभवों को प्रभावित करता है। यदि समाज किसी व्यक्ति को उसकी क्षमता के बजाय उसकी दिव्यांगता के आधार पर परिभाषित करता है, तो उसकी सामाजिक पहचान सीमित हो सकती है। खेल इस सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन का माध्यम बन सकता है। जब पैरा-एथलीट राष्ट्रीय अथवा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदर्शन करता है, तो वह दिव्यांगता से संबंधित पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देता है और क्षमता आधारित पहचान को सामने लाता है।

10.7 रोजगार और भविष्य की सुरक्षा

क्षेत्रीय अध्ययन में प्रशिक्षण के बाद रोजगार के अवसरों की सीमितता तथा स्थिर आय को लेकर अनिश्चितता सामने आई। यह निष्कर्ष विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि खेल उपलब्धि को स्थायी आर्थिक सुरक्षा में बदलने के लिए संस्थागत समर्थन आवश्यक है। यदि खिलाड़ी को खेल के बाद रोजगार, आर्थिक सहायता अथवा कैरियर मार्गदर्शन उपलब्ध नहीं होता, तो उसकी खेल उपलब्धि का सामाजिक-आर्थिक लाभ सीमित रह सकता है। इसलिए पैरा-एथलीट्स की नीति और संस्थागत व्यवस्था में खेल प्रशिक्षण के साथ-साथ “कैरियर संक्रमण और रोजगार” को भी शामिल किया जाना आवश्यक है।

10.8 लैंगिक आयाम

क्षेत्रीय अध्ययन में पुरुष उत्तरदाताओं का प्रतिशत 66.67 प्रतिशत तथा महिला उत्तरदाताओं का प्रतिशत 33.33 प्रतिशत था। यह क्षेत्रीय नमूने की संरचना है और इसे पूरे पैरा-एथलीट समुदाय का प्रतिनिधि अनुपात नहीं माना जा सकता। फिर भी महिला पैरा-एथलीट्स की अपेक्षाकृत कम भागीदारी आगे के विस्तृत अध्ययन में लैंगिक अवसरों, प्रशिक्षण सुविधाओं, पारिवारिक समर्थन, सुरक्षा, सामाजिक मान्यता और खेल संसाधनों तक पहुँच की जाँच की आवश्यकता को दर्शाती है। इस संदर्भ में लिंग और दिव्यांगता के अंतर्संबंध को समझने के लिए अंतर्विभाजकता का दृष्टिकोण उपयोगी हो सकता है।

10.9 संरचनात्मक असमानता का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

प्रस्तुत अध्ययन के विभिन्न निष्कर्षों को एक साथ देखने पर यह स्पष्ट होता है कि पैरा-एथलीट्स की चुनौतियाँ केवल व्यक्तिगत स्तर की समस्याएँ नहीं हैं। आर्थिक संसाधनों की कमी, आधुनिक उपकरणों का अभाव, सीमित संस्थागत सहयोग, सामाजिक भेदभाव और रोजगार के सीमित अवसर व्यापक सामाजिक संरचनाओं से जुड़े हुए हैं। इसलिए पैरा-स्पोर्ट्स में समानता स्थापित करने के लिए केवल व्यक्तिगत प्रेरणा या प्रतिभा पर निर्भर रहना पर्याप्त नहीं है। सामाजिक संस्थाओं और संरचनाओं में उपलब्ध अवसरों को अधिक समावेशी बनाना भी आवश्यक है।

10.10 साहित्य और प्राथमिक अध्ययन के बीच संबंध

पूर्ववर्ती साहित्य में पैरा-एथलीट्स के लिए सामाजिक समर्थन, आत्म-सम्मान, सामाजिक पहचान, संस्थागत सुविधाओं तथा खेल प्रशिक्षण के महत्व पर बल दिया गया है। प्रस्तुत क्षेत्रीय अध्ययन के क्षेत्रीय निष्कर्ष इन आयामों को स्थानीय संस्थागत संदर्भ में समझने का अवसर प्रदान करते हैं। विशेष रूप से आर्थिक संसाधनों की कमी, आधुनिक उपकरणों की अपर्याप्तता, उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण की सीमाएँ, कैरियर सहयोग की कमी तथा सामाजिक मान्यता से संबंधित निष्कर्ष यह संकेत देते हैं कि पैरा-स्पोर्ट्स को केवल प्रदर्शन-आधारित दृष्टिकोण से नहीं देखा जाना चाहिए।

10.11 चर्चा का समग्र निष्कर्ष

प्रस्तुत चर्चा से यह स्पष्ट होता है कि पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता व्यक्तिगत क्षमता और प्रतिभा के साथ-साथ सामाजिक एवं संस्थागत परिस्थितियों पर भी निर्भर करती है। खेल उनके लिए सामाजिक पहचान, आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता का माध्यम बन सकता है लेकिन आर्थिक सीमाएँ, संस्थागत संसाधनों की कमी, सामाजिक भेदभाव, सीमित कैरियर सहायता और रोजगार की अनिश्चितता उनकी प्रगति में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं।

इस प्रकार पैरा-स्पोर्ट्स के समाजशास्त्रीय अध्ययन में “व्यक्ति और संरचना दोनों” को साथ लेकर चलना आवश्यक है। खिलाड़ी की व्यक्तिगत क्षमता तभी प्रभावी सामाजिक उपलब्धि में परिवर्तित हो सकती है जब उसे पर्याप्त आर्थिक, पारिवारिक, संस्थागत और सामाजिक समर्थन प्राप्त हो।

11. प्रमुख निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य पैरा-एथलीट्स की सामाजिक एवं संस्थागत स्थिति को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझना है। अध्ययन में खेल को केवल शारीरिक क्षमता एवं प्रतियोगी प्रदर्शन के रूप में न देखकर सामाजिक पहचान, सामाजिक समावेशन, आत्म-सम्मान, संस्थागत सहयोग तथा आर्थिक सुरक्षा से जुड़े व्यापक सामाजिक संदर्भ के रूप में देखा गया है।

क्षेत्रीय अध्ययन में 20–30 वर्ष आयु-वर्ग के कुल 15 पैरा-एथलीट्स को सम्मिलित किया गया। इनमें 66.67 प्रतिशत पुरुष तथा 33.33 प्रतिशत महिला प्रतिभागी थे। अध्ययन के क्षेत्र में डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ अटल बिहारी वाजपेयी दिव्यांग खेल प्रशिक्षण केन्द्र, ग्वालियर तथा भारतीय खेल प्राधिकरण, लखनऊ से संबंधित क्षेत्रीय परिस्थितियों का अध्ययन किया गया।

अध्ययन से यह संकेत प्राप्त हुआ कि पैरा-एथलीट्स के सामने आने वाली समस्याएँ केवल व्यक्तिगत या शारीरिक प्रकृति की नहीं हैं। आर्थिक संसाधनों की कमी, सीमित पारिवारिक सहयोग, सामाजिक भेदभाव, आधुनिक खेल उपकरणों की कमी, उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण की सीमित उपलब्धता तथा प्रशिक्षण के बाद रोजगार और कैरियर सहयोग की कमी जैसे कारक उनकी खेल सहभागिता और भविष्य की सुरक्षा को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार पैरा-एथलीट्स की स्थिति को समझने के लिए व्यक्ति और सामाजिक संरचना के बीच संबंध को समझना आवश्यक है।

1. खेल सामाजिक पहचान का माध्यम है

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि खेल पैरा-एथलीट्स के लिए केवल प्रतियोगिता का माध्यम नहीं है। यह उन्हें समाज में एक सकारात्मक एवं सम्मानजनक सामाजिक पहचान स्थापित करने का अवसर भी प्रदान करता है।

2. आर्थिक संसाधनों की भूमिका महत्वपूर्ण है

आर्थिक संसाधनों की कमी प्रशिक्षण, उपकरण, यात्रा और प्रतियोगिताओं में भागीदारी की संभावनाओं को प्रभावित कर सकती है। इसलिए खेल में समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए आर्थिक सहायता महत्वपूर्ण है।

3. संस्थागत सुविधाओं में असमानता

कुछ संस्थानों में आवासीय सुविधा एवं नियमित प्रशिक्षण उपलब्ध होने के बावजूद आधुनिक उपकरण, उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण और पर्याप्त संसाधनों की सीमाएँ सामने आईं।

4. पारिवारिक सहयोग का महत्व

परिवार का समर्थन पैरा-एथलीट के खेल जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन में सीमित पारिवारिक सहयोग एवं जागरूकता की समस्या सामने आई।

5. सामाजिक भेदभाव एक महत्वपूर्ण चुनौती है

दिव्यांगता के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण पैरा-एथलीट्स की सामाजिक पहचान को प्रभावित कर सकता है। इसलिए केवल खेल सुविधाओं में सुधार पर्याप्त नहीं है, सामाजिक जागरूकता और संवेदनशीलता भी आवश्यक है।

6. कैरियर सहायता की आवश्यकता

प्रशिक्षण एवं प्रतियोगिता के बाद दीर्घकालीन कैरियर सहायता सीमित दिखाई दी। इसलिए पैरा-एथलीट्स के लिए खेल प्रशिक्षण के साथ कैरियर मार्गदर्शन और रोजगार सहायता आवश्यक है।

7. खेल उपलब्धि और सामाजिक मान्यता में अंतर

अध्ययन में यह संकेत मिला कि कुछ खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं, फिर भी उन्हें अपेक्षित सामाजिक पहचान और समर्थन नहीं मिल पाता।

8. लैंगिक आयाम को अधिक ध्यान देने की आवश्यकता

क्षेत्रीय नमूने में पुरुष खिलाड़ियों का प्रतिशत 66.67 प्रतिशत और महिला खिलाड़ियों का प्रतिशत 33.33 प्रतिशत था। यह पूरे पैरा-एथलीट समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करता, लेकिन भविष्य के विस्तृत अध्ययन में महिला पैरा-एथलीट्स की सहभागिता एवं बाधाओं का पृथक अध्ययन आवश्यक बनाता है।

11.2 समाजशास्त्रीय निष्कर्ष

अध्ययन के आधार पर पैरा-स्पोर्ट्स को निम्नलिखित समाजशास्त्रीय अवधारणाओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

समाजशास्त्रीय अवधारणा	अध्ययन से संबंध
सामाजिक पहचान	खिलाड़ी के रूप में सकारात्मक पहचान का निर्माण
सामाजिक समावेशन	खेल के माध्यम से मुख्यधारा में सहभागिता
सामाजिक बहिष्करण	संसाधनों एवं अवसरों की सीमित उपलब्धता
सामाजिक पूँजी	परिवार, प्रशिक्षक और संस्थागत सहयोग
आर्थिक पूँजी	प्रशिक्षण एवं उपकरणों तक पहुँच
सांस्कृतिक पूँजी	खेल संबंधी ज्ञान एवं प्रशिक्षण
क्लंक	दिव्यांगता से जुड़ी सामाजिक धारणाएँ
सामाजिक गतिशीलता	खेल उपलब्धि के माध्यम से सामाजिक प्रतिष्ठा एवं अवसर
लैंगिक असमानता	महिला खिलाड़ियों की सहभागिता से संबंधित प्रश्न

इस प्रकार पैरा-स्पोर्ट्स को केवल खेल समाजशास्त्र का विषय न मानकर “दिव्यांगता, सामाजिक असमानता, पहचान, समावेशन और सामाजिक संस्थाओं” के अंतर्संबंध के रूप में भी समझा जा सकता है।

11.3 सुझाव

1. आधुनिक खेल उपकरणों की उपलब्धता

पैरा-एथलीट्स की विभिन्न आवश्यकताओं के अनुरूप आधुनिक एवं अनुकूलित खेल उपकरण उपलब्ध कराए जाने चाहिए।

2. उन्नत तकनीकी प्रशिक्षण

केवल आधारभूत प्रशिक्षण के बजाय खिलाड़ियों को आधुनिक प्रशिक्षण तकनीक, खेल विज्ञान तथा विशेषज्ञ प्रशिक्षकों की सहायता उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

3. आर्थिक सहायता

आर्थिक रूप से कमजोर खिलाड़ियों के लिए प्रशिक्षण, उपकरण, यात्रा और प्रतियोगिता से संबंधित खर्चों में सहायता की व्यवस्था मजबूत की जानी चाहिए।

4. कैरियर मार्गदर्शन

खेल प्रशिक्षण के साथ दीर्घकालीन कैरियर योजना, रोजगार परामर्श तथा प्रतियोगिता के बाद के जीवन के लिए मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

5. रोजगार के अवसर

पैरा-एथलीट्स के लिए खेल उपलब्धियों के अनुरूप रोजगार एवं व्यावसायिक अवसरों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

6. परिवार आधारित जागरूकता

परिवारों में दिव्यांगता और पैरा-स्पोर्ट्स के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए।

7. सामाजिक संवेदनशीलता

विद्यालयों, विश्वविद्यालयों, खेल संस्थानों और समुदायों में दिव्यांगता के प्रति संवेदनशील एवं अधिकार-आधारित दृ

ष्टिकोण विकसित किया जाना चाहिए।

8. महिला पैरा-एथलीट्स पर विशेष ध्यान

महिला पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण, सुरक्षा, परिवार, परिवहन तथा संस्थागत सहयोग से संबंधित विशेष व्यवस्थाएँ विकसित की जानी चाहिए।

9. संस्थागत निगरानी

खेल संस्थानों में उपलब्ध सुविधाओं, उपकरणों, प्रशिक्षकों तथा खिलाड़ियों की आवश्यकताओं का नियमित मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

10. खेल से आगे सामाजिक सुरक्षा

पैरा-एथलीट्स की नीति केवल पदक एवं प्रदर्शन पर केंद्रित न होकर शिक्षा, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और दीर्घकालीन जीवन-स्थिरता को भी शामिल करे।

11.4 भविष्य के शोध की दिशा

भविष्य के अध्ययन में निम्न विषयों पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है:

- महिला पैरा-एथलीट्स की खेल सहभागिता।
- ग्रामीण और शहरी पैरा-एथलीट्स की तुलनात्मक स्थिति।
- सामाजिक वर्ग और पैरा-स्पोर्ट्स के अवसरों का संबंध।
- परिवार और खेल उपलब्धि के बीच संबंध।
- पैरा-एथलीट्स के रोजगार एवं कैरियर संक्रमण का अध्ययन।
- खेल सुविधाओं और प्रदर्शन के बीच संबंध।
- दिव्यांगता के प्रकार के अनुसार प्रशिक्षण आवश्यकताओं का तुलनात्मक अध्ययन।
- पैरा-एथलीट्स की सामाजिक पहचान और सामाजिक प्रतिष्ठा।
- खेल मीडिया में पैरा-एथलीट्स के प्रतिनिधित्व का अध्ययन।
- पैरा-स्पोर्ट्स नीतियों के क्रियान्वयन का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन

अंततः प्रस्तुत अध्ययन यह दर्शाता है कि पैरा-एथलीट्स की खेल यात्रा को केवल व्यक्तिगत प्रतिभा, मेहनत अथवा शारीरिक प्रदर्शन के आधार पर नहीं समझा जा सकता। उनके खेल जीवन को आर्थिक संसाधनों, पारिवारिक समर्थन, सामाजिक दृष्टिकोण, संस्थागत सुविधाओं, प्रशिक्षण व्यवस्था, सामाजिक पहचान तथा भविष्य के रोजगार अवसरों के साथ जोड़कर देखना आवश्यक है। खेल पैरा-एथलीट्स के लिए सामाजिक पहचान, आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता का महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है। लेकिन इस संभावना को वास्तविक सामाजिक परिवर्तन में बदलने के लिए ऐसी संस्थागत व्यवस्था आवश्यक है जो प्रशिक्षण के साथ-साथ आर्थिक सहायता, आधुनिक उपकरण, कैरियर मार्गदर्शन, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा को भी सुनिश्चित करे।

इस दृष्टि से पैरा-स्पोर्ट्स का विकास केवल खेल उपलब्धियों का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समावेशन, समान अवसर, गरिमा और सामाजिक न्याय से जुड़ा व्यापक समाजशास्त्रीय प्रश्न है।

संदर्भ सूची

1. Beyond the Field: India's Sports Initiatives. (n.d.). Retrieved from [Government publication or sports initiative source – PDF].
2. Bourdieu, P. (1986). The Forms of Capital. In Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education, edited by J. G. Richardson. Greenwood Press.
3. Census of India. (2011). Data on Disability. Government of India. <https://censusindia.gov.in/>

4. Delaney, T., & Madigan, T. (2015). *The sociology of sports: An introduction* (2nd ed.). McFarland & Company, Inc.
5. Duarte Junior, M. A., Enriquez-Martinez, O. G., Brisola, K. M., Oliveira, J., Molina, M. C. B., Trakman, G. L., de Mello, M. T., & Longhi, R. (2023). Nutritional intake in high-performance para athletes. *Nutrition*, 116, 112168. <https://doi.org/10.1016/j.nut.2023.112168>
6. Ekram, I. L. (2023). Disability Acceptance and Resilience among Athletes and Non-athletes. *Journal of Disability Research*, 11(2), 78–92.
7. Fay, T. E., & Wolff, E. (2009). *Disability and Sport: The Participation Perspective*. Disability in Sport Initiative (DISI), United States.
8. Gee, C. M., Lacroix, M. A., Stellingwerff, T., Gavel, E. H., Logan-Sprenger, H. M., & West, C. R. (2021). Physiological considerations to support podium performance in para-athletes. *Frontiers in Rehabilitation Sciences*, 2, 732342. <https://doi.org/10.3389/fresc.2021.732342>
9. Ghorh, D., & Chatterjee, K. (2022). From Isolation to Integration: India's Journey in the Paralympic Movement. *International Journal of Physical Education and Sports Studies*, 7(2), 101–117.
10. Goffman, E. (1963). *Stigma: Notes on the Management of Spoiled Identity*. Prentice-Hall.
11. International Paralympic Committee. (2021). Tokyo 2020 Paralympic Games Official Results. Retrieved from <https://www.paralympic.org/tokyo-2020/results>
12. Jefferies, P., Gallagher, P., & Dunne, S. (2012). The Paralympic athlete: a systematic review of the psychosocial literature. *Prosthetics and Orthotics International*, 36(3), 278–289. <https://doi.org/10.1177/0309364612450184>
13. Jeffrey, M., & Vitali, F. (2014). *Disability and Sport*. In *Encyclopedia of Sport and Exercise Psychology* (pp. 195–198). SAGE Publications.
14. Ministry of Youth Affairs and Sports. (2020). *Khelo India Programme Guidelines*. Government of India.
15. Pinheiro, L. S. P., Ocarino, J. M., Madaleno, F. O., Verhagen, E., de Mello, M. T., Albuquerque, M. R., Andrade, A. G. P., da Mata, C. P., Pinto, R. Z., Silva, A., & Resende, R. A. (2021). Prevalence and incidence of injuries in para athletes: a systematic review with meta-analysis and GRADE recommendations. *British Journal of Sports Medicine*, 55, 1357–1365. <https://doi.org/10.1136/bjsports-2020-102823>
16. Puce, L., Okwen, P. M., Yuh, M. N., Okwen, G. A. N., Miong, R. H. P., Kong, J. D., & Bragazzi, N. L. (2023). Well-being and quality of life in people with disabilities practicing sports, athletes with disabilities, and para-athletes: Insights from a critical review of the literature. *Frontiers in Psychology*, 14, 1071656. <https://doi.org/10.3389/fpsyg.2023.1071656>
17. Ranjita, D. (2023). Disability and Barriers to Sports Participation in India: A Policy Review. *Journal of Social Inclusion Studies*, 4(1), 85–98.
18. Rodríguez Macías, M., Giménez Fuentes-Guerra, F. J., & Abad Robles, M. T. (2022). The sport training process of para-athletes: A systematic review. *International Journal of Environmental Research and Public Health*, 19(12), 7242. <https://doi.org/10.3390/ijerph19127242>
19. Singh, R. (2012). Positive and Negative Impact of Sports on Youth. *Journal of Physical Education*, 9(1), 34–39.
20. Singh, V., Singh, M. K., & Bhutia, T. N. (2021). A study of self-esteem among standing and sitting para-athletes in India. Open India Para-Athlete Championship Report.

21. Sports Authority of India. (2023). Target Olympic Podium Scheme (TOPS): Annual Report. Retrieved from <https://sportsauthorityofindia.gov.in>
22. World Health Organization. (2011). World Report on Disability. WHO Press.